जो सो सव्वफासो णाम ॥ २१ ॥

तस्स अत्थपरूवणं कस्सामो-

जं दव्वं सव्वं सव्वेण फुसदि, जहा परमाणुदव्वमिदि, सो सव्वो सव्वफासो णाम ॥ २२ ॥

जं किंचि दव्वमण्णेण दव्वेण सव्वं सव्वप्पणा पुसिज्जदि सो सव्वफासो णाम । जहा परमाणुदव्वमिदि । एदं दिट्ठंतवयणं । एदस्स अत्थो वुच्चदे-जहा परमाणुदव्वमण्णेण परमाणुणा पुसिज्जमाणं सव्वं सव्वप्पणा पुसिज्जदि तहा अण्णो वि जो एवंविहो फासो सो सव्वफासो त्ति दट्ठव्वो ।

एत्थ चोदओ भणदि-एसो दिट्ठंतो ण घडदे । तं जहा- परमाणू परमाणुम्हि पविस्समाणो[1] किमेगदेसेण पविसदि आहो सव्वप्पणा[2] ? ण पढमपक्खो, परमाणुदव्वं[3] सव्वं सव्वप्पणा अण्णेण परमाणुणा पुसिज्जदि त्ति वयणेण सह विरोहादो । ण बिदियपक्खो वि, दव्वे दव्वम्हि गंधे गंधम्मि रूवे रूवम्हि रसे रसम्मि फासे फासम्मि पविट्ठे परमाणुदव्वस्स अभावप्पसंगादो । ण चाभावो, दव्वस्स अभावत्तविरोहादो । ण सरूवमच्छंडिय[4] पविसदि,

---

मान कर त्वक्स्पर्शका पृथक्‌से विवेचन किया गया है । शेष कथन सुगम है ।

इस प्रकार त्वक्स्पर्शप्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब सर्वस्पर्शका अधिकार है ॥ २१ ॥

उसके अर्थका कथन करते हैं –

जो द्रव्य सबका सब सर्वात्मना स्पर्श करता है, यथा परमाणु द्रव्य, वह सब सर्वस्पर्श है ॥ २२ ॥

जो कोई द्रव्य अन्य द्रव्यके साथ सबका सब सर्वात्मना स्पर्श करता है वह सर्वस्पर्श है । यथा परमाणु द्रव्य । यह दृष्टान्तवचन है । आगे इसका अर्थ कहते हैं- जिस प्रकार परमाणु द्रव्य अन्य परमाणुके साथ स्पर्श करता हुआ सबका सब सर्वात्मना स्पर्श करता है उसी प्रकार अन्य भी जो इस प्रकारका स्पर्श है वह सर्वस्पर्श है, ऐसा जानना चाहिये ।

शंका – यहां शंकाकारका कहना है कि यह दृष्टान्त घटित नहीं होता है । वह इस प्रकारसे- एक परमाणु अन्य परमाणुमें प्रवेश करता हुआ क्या एकदेशेन प्रवेश करता है या सर्वात्मना प्रवेश करता है ? प्रथम पक्ष तो ठीक नहीं है, क्योंकि, 'परमाणु द्रव्य सबका सब अन्य परमाणुके साथ सर्वात्मना स्पर्श करता है' इस वचनके साथ विरोध आता है । दूसरा पक्ष भी ठीक नहीं है, क्योंकि द्रव्यका द्रव्यमें, गन्धका गन्धमें, रूपका रूपमें, रसका रसमें और स्पर्शका स्पर्शमें प्रवेश हो जानेपर परमाणु द्रव्यका अभाव प्राप्त होता है । परन्तु अभाव हो नहीं सकता, क्योंकि, द्रव्यका अभाव माननेमें विरोध आता है । एक पुद्‌गलका अपने स्वरूपको छोड़कर अन्य पुद्गलमें प्रवेश

---

(१) ताप्रतौ 'पविसमाणो' इति पाठः । (२) अप्रतौ 'सव्वप्पणेण' इति पाठः ।
(३) ताप्रतौ '-दव्वं सव्वप्पणा' इति पाठः । (४) अप्रतौ 'मच्छद्दिय' इति पाठः ।

पोग्गलम्मि ओगाहणधम्माभावादो । भावे वा आगासदव्वस्स अभावो होज्ज, तेण कीरमाण-कज्जस्स पोग्गलेणेव कदत्तादो । सुवण्णम्हि[1] पारयस्स पवेसो सरूवपरिच्चागमंतरेण उवलब्भदि त्ति चे- होदु खंधेसु खंधाणं पवेसो, सरूवपरिच्चागेण विणा छारच्छाणिमट्टियासु[2] जलादीणं पवेसुवलंभादो । ण च परमाणूणमेस क्कमो, सयलथूलकज्जाणमभावप्पसंगादो । केसिं पि परमाणूणं एगदेसेण फासो, केसिं पि सव्वप्पणा, तेण[3] परमाणूहिंतो थूलकज्जुप्पत्ती ण विरुज्झदि त्ति चे- ण, कम्हि वि कालम्हि सव्वेसु पोग्गलेसु एगपरमाणुम्हि पविट्ठेसु परमाणुमेत्तस्स अवट्ठाणप्पंसगादो । होदु चे - ण, तिहुवणजणतणुविणासेण सव्वजीवाणं णिव्वुइप्पसंगादो। एक्कम्हि परमाणुम्हि सव्वो पोग्गलरासी ण पविसदि, किंतु थोवा चेव परमाणू पविसंति त्ति चे-ण, थोवपवेसस्स कारणाभावादो । ओगाहणसत्ती बहुआ णत्थि त्ति थोवा चेव पविसंति त्ति चे-ण, आयासं मोत्तूण अण्णत्थ ओगाहणधम्माभावादो । जदि परमाणुम्हि परमाणूणं पवेसो णत्थि तो असंखेज्जपदेसिए लोगागासे कधमणंताणं पोग्गलाणं अवट्ठाणं चे -

नहीं होता, क्योंकि, पुद्गलमें अवगाहन धर्मका अभाव है। और यदि उसमें अवगाहन धर्मका सद्भाव माना भी जाय तो आकाश द्रव्यका अभाव प्राप्त होता है, क्योंकि, उसके द्वारा किये जानेवाले कार्यको पुद्गलने ही कर दिया । यदि कहा जाय कि सुवर्णमें पारदका अपने स्वरूपका त्याग किये बिना ही प्रवेश देखा जाता है, तो इसपर यह कहना है कि स्कन्धोंमें स्कन्धोंका प्रवेश भले ही हो जाय, क्योंकि स्वरूपका परित्याग किये बिना ही क्षार, छाणि, और मिट्टीमें जल आदिकका प्रवेश देखा जाता है । परन्तु परमाणुओंमें यह क्रम नहीं पाया जाता, क्योंकि, ऐसा माननेपर समस्त स्थूल कार्योंके अभावका प्रसंग प्राप्त होता है । यदि कहा जाय कि किन्हीं परमाणुओंका एकदेशेन स्पर्श होता है और किन्हीं परमाणुओंका सर्वात्मना स्पर्श होता है, इसलिये परमाणुओंसे स्थूल कार्यकी उत्पत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं आता । सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा माननेपर स्यात् किसी कालमें सब पुद्गल एक परमाणुमें प्रविष्ट हो जायेंगे तब परमाणुमात्र अवस्थान प्राप्त होगा । यदि कहा जाय कि ऐसा ही हो जाय, सो यह बात भी नहीं है; क्योंकि, तब तीन लोकके जीवोंके शरीरका विनाश हो जानेसे सब जीवोंको मुक्तिका प्रसंग प्राप्त होता है। यदि कहा जाय कि एक परमाणुमें सब पुद्गल राशि प्रवेश नहीं करती, किन्तु स्वल्प परमाणु ही प्रवेश करते हैं । सो ऐसा कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, स्वल्प परमाणु ही प्रवेश करते हैं इसका कोई कारण नहीं पाया जाता । यदि कहा जाय कि अधिक अवगाहन शक्ति नहीं पाई जाती, इसलिये स्वल्प परमाणु ही प्रवेश करते हैं । सो भी कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, आकाशके सिवाय अन्य द्रव्यमें अवगाहन धर्म नहीं पाया जाता । इसपर कहा जाय कि यदि परमाणुमें परमाणुओंका प्रवेश नहीं होता तो असंख्यप्रदेशी लोकाकाशमें अनन्त पुद्गलोंका अवस्थान कैसे बन सकता है । सो भी कहना

(१) अप्रतौ 'सुव्वण्णम्हि' इति पाठः । (२) प्रतिषु 'मट्टियासजलादीणं' इति पाठः ।
(३) अप्रतौ 'सव्वप्पणासेण तेण' इति पाठः ।

ण, ओगाहणधम्मियआयासमाहप्पेण तेसिमवट्ठाणविरोहाभावादो ?

एत्थ परिहारो वुच्चदे । तं जहा–परमाणु किं सावयवो किमु णिरवयवो ? ण ताव सावयवो, परमाणुसद्दाहिहेयादो पुधभूदअवयवाणुवलंभादो । उवलंभे वा ण सो परमाणू,अपत्तभिज्जमाणभेद[1] पेरंतत्तादो । ण च अवयवी चेव अवयवो होदि, अण्णपदत्थेण[2] विणा बहुव्वीहिसमासाणुववत्तीदो संबंधेण विणा संबंधणिबंधण–इं–[3] पच्चयाणुववत्तीदो वा । ण च परमाणुस्स उद्धाधोमज्झभागाणमवयवत्तमत्थि, तेहिंतो पुधभूदपरमाणुस्स अवयवविसण्णिदस्स अभावादो । एदम्हि[4] णए अवलंबिज्जमाणे सिद्धं परमाणुस्स णिर-वयवत्तं । संजुत्ताणमसंजुत्ताणं च परमाणुपमाणत्तणेण उवलब्भमाणपोग्गलक्खंधाणम-भावप्पसंगादो अवगयावयवपरमाणुदेसपासो चेव दव्वट्ठियबलेण सव्वफासो त्ति परूविदो, अखंडाणं परमाणूणमवयवाभावेण सव्वफासस्सेव संभवदंसणादो । अधवा दोण्णं पर-माणूणं देसफासो होदि, थूलक्खंधुप्पत्तीए अण्णहा अणुववत्तीदो । सव्वफासो वि होदि, परमाणुम्मि परमाणुस्स सव्वप्पणा पवेसाविरोहादो । ण च पविसंतपरमाणुस्स परमाणू

ठीक नहीं है, क्योंकि, अवगाहन धर्मवाले आकाशके माहात्म्यसे अनन्त पुद्गलोंका असंख्यप्रदेशी लोकाकाशमें अवस्थान माननेमें कोई विरोध नहीं आता ?

समाधान – यहां उक्त शंकाका परिहार करते हैं । यथा– परमाणु क्या सावयव होता है या निरवयव ? सावयव तो हो नहीं सकता, क्योंकि, परमाणु शब्दके वाच्यरूप उससे अवयव पृथक् नहीं पाये जाते । यदि उसके पृथक् अवयव माने जाते हैं तो वह परमाणु नहीं ठहरता, क्योंकि, जितने भेद होने चाहिये उनके अन्तको वह अभी नहीं प्राप्त हुआ है । यदि कहा जाय कि अवयवीको ही हम अवयव मान लेंगे सो भी कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, एक तो बहुव्रीहि समास अन्यपदार्थप्रधान होता है, कारण कि उसके बिना वह बन नहीं सकता । दूसरे, सम्बन्धके बिना सम्बन्धका कारणभूत 'णिनि'प्रत्यय भी नहीं बन सकता । यदि कहा जाय कि परमाणुके ऊर्ध्व भाग, अधोभाग और मध्य भाग रूपसे अवयव बन जायेंगे सो भी बात नहीं है, क्योंकि, इन भागोंके अतिरिक्त अवयवी संज्ञावाले परमाणुका अभाव है । इस प्रकार इस नयके अवलम्बन करनेपर परमाणु निरवयव है, यह बात सिद्ध होती है । संयुक्त पुद्गलस्कंध और असंयुक्त परमाणु प्रमाण उपलब्ध होनेवाले पुद्गलस्कन्धोंका अभाव न प्राप्त हो इसलिये अवयव रहित परमाणुओंका देशस्पर्श ही यहां द्रव्यार्थिकनयके बलसे सर्वस्पर्श है ऐसा कहा है, क्योंकि, अखण्ड परमाणुओंके अवयव नहीं होनेके कारण उनका सर्वस्पर्श ही सम्भव दिखाई देता है । अथवा दो परमाणुओंका देशस्पर्श होता है, अन्यथा स्थूल स्कन्धोंकी उत्पत्ति नहीं बन सकती । उनका सर्वस्पर्श भी होता है, क्योंकि, एक परमाणुका दूसरे परमाणुमें सर्वात्मना प्रवेश होनेमें कोई विरोध नहीं आता । पर इसका यह अर्थ नहीं कि प्रवेश करनेवाले परमाणुको दूसरा परमाणु प्रतिबन्ध

---

(१) अप्रतौ 'भेदे परतत्तादो', ताप्रतौ 'भेदे पेरंतत्तादो' इति पाठः । (२) प्रतिषु 'पदत्तेण' इति पाठः ।
(३) ताप्रतौ 'णिबंधणाइं' इति पाठः ।

पडिबंधदि, सुहुमस्स सुहुमेण बादरक्खंधेण वा पडिबंधकरणाणुववत्तीदो ।

सुहुमं णाम सण्णं, ण अपडिहण्णमाणमिदि चे-ण, आयासादीणं महल्लाणं सुहुमत्ताभावप्पसंगादो । तदो सरूपापरिच्चाएण सव्वप्पणा परमाणुस्स परमाणुम्मि पवेसो सव्वफासो त्ति ण दिट्ठंतो वइधम्मिओ ।

जो सो फासफासो णाम ।। २३ ।।

एदस्सत्थो वुच्चदे-

सो[1] अट्ठविहो-कक्खडफासो मउवफासो गरुवफासो लहुवफासो णिद्धफासो रुक्खफासो सीदफासो उण्हफासो । सो सव्वो फासफासो णाम ।। २४ ।।

स्पृश्यत इति स्पर्शः कर्कशादि[2]: । स्पृश्यत्यनेनेति स्पर्शस्त्वगिन्द्रियम् । तयोर्द्वयोः स्पर्शयोः स्पर्शः स्पर्शस्पर्शः । स च अष्टविधः-कर्कशस्पर्शः मृदुस्पर्शः गुरुस्पर्शः लघुस्पर्शः

करता है, क्योंकि, सूक्ष्मका दूसरे सूक्ष्म स्कन्धके द्वारा या बादरके द्वारा प्रतिबन्ध करनेका कोई कारण नहीं पाया जाता ।

शंका - सूक्ष्मका अर्थ बारीक है । दूसरेके द्वारा नहीं रोका जाना, यह उसका अर्थ नहीं है ?

समाधान - नहीं, क्योंकि, सूक्ष्मका यह अर्थ करनेपर महान् आकाश आदि सूक्ष्म नहीं ठहरेंगे।

इसलिये अपने स्वरूपको छोडे बिना एक परमाणुका दूसरे परमाणुमें सर्वात्मना प्रवेशका नाम सर्वस्पर्श कहलाता है, अतः सूत्रमें सर्वस्पर्शके लिये परमाणुका दिया गया दृष्टान्त वैधर्म्य नहीं है ।

विशेषार्थ - सर्वस्पर्शमें एक वस्तुका दूसरी वस्तुके साथ पूरा स्पर्श लिया गया है और इसके उदाहरण स्वरूप परमाणु द्रव्य उपस्थित किया गया है । एक परमाणुका दूसरे परमाणुके साथ देश और सर्व दोनों प्रकारका स्पर्श देखा जाता है । परमाणु निरंश होता है या सांश यह प्रश्न पुराना है । परमाणु अखण्ड और एक है, इस नयकी अपेक्षा वह निरंश माना जाता है । किन्तु प्रत्येक परमाणुमें पूर्व, पश्चिम आदि भाग देखे जाते हैं, इस नयकी अपेक्षा वह सांश माना जाता है । इसलिये जब एकपरमाणुका दूसरे परमाणुके साथ एकप्रदेशावगाही स्पर्श होता है तब वह सर्वस्पर्श कहलाता है और जब दोप्रदेशावगाही स्पर्श होता है तब वह देशस्पर्श कहलाता है । इस प्रकार सर्वत्र जानना चाहिये ।

अब स्पर्शस्पर्शका अधिकार है ।। २३ ।।

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं-

वह आठ प्रकारका है-कर्कशस्पर्श, मृदुस्पर्श, गुरुस्पर्श, लघुस्पर्श, स्निग्धस्पर्श, रूक्षस्पर्श, शीतस्पर्श और उष्णस्पर्श । वह सब स्पर्शस्पर्श है ।। २४ ।।

जो स्पर्श किया जाता है वह स्पर्श है, यथा कर्कश आदि । जिसके द्वारा स्पर्श किया जाय वह स्पर्श है, यथा त्वचा इन्द्रिय । इन दोनों स्पर्शोंका स्पर्श स्पर्शस्पर्श कहलाता है । वह आठ प्रकारका है-कर्कशस्पर्श, मृदुस्पर्श, गुरुस्पर्श, लघुस्पर्श, स्निग्धस्पर्श, रूक्षस्पर्श, शीतस्पर्श

---

(१) अ-ताप्रत्योः 'जो सो' इति पाठः । (२) अप्रतौ 'कर्कशादीहि', ताप्रतौ 'कर्कशादीहि (नि)' इति पाठः ।

स्निग्धस्पर्शः रूक्षस्पर्शः शीतस्पर्शः उष्णस्पर्शश्चेति। स्पर्शभेदात्स्पर्शस्पर्शोऽपि अष्टधा भवतीत्यवगन्तव्यः । एत्थ केवि आइरिया कक्खडादिफासाणं पहाणीकयाणं एगादिसंजोगेहि फासभंगे उप्पायंति, तण्ण घडदे; गुणाणं णिस्सहावाणं गुणेहि फासाभावादो । पहाणभावेण दव्वत्तमुवगयाणं फासो जदि इच्छिज्जदि तो रूव-रस-गंधादीणं पि फासेण होदव्वं; पहाणभावेण दव्वभावुवगमणं पडि भेदाभावादो । होदु चे-ण, सुत्ते तहाणुवलंभादो तेरसफासे मोत्तूण बहुफासप्पसंगादो च । तम्हा कक्खडं कक्खडेण फुसिज्जदे[1] इच्चादिभंगा एत्थ ण वत्तव्वा, दव्वफासे देसफासे च तेसिमंतब्भावादो । एसो तत्थ ण पविसदि, विसय-विसइभावप्पणादो । अधवा सुत्तस्स देसामासियत्ते णिक्खेवसंखाणियमो णत्थि त्ति संगतोक्खित्तासेसविसेसंतराणमट्ठण्णं फासाणं संजोएण दुसद-पंचवंचास भंगा उप्पाएयव्वा ।

और उष्णस्पर्श । इस प्रकार स्पर्शके भेदसे स्पर्शस्पर्श भी आठ प्रकारका होता है, ऐसा यहां जानना चाहिये।

यहां कितने ही आचार्य प्रधानताको प्राप्त हुए कर्कश आदि स्पर्शोंके एक आदि संयोगों द्वारा स्पर्शभंग उत्पन्न कराते हैं; परन्तु वे बनते नहीं, क्योंकि, गुण निस्वभाव होते हैं, इसलिये उनका अन्य गुणोंके साथ स्पर्श नहीं बन सकता । प्रधानरूपसे द्रव्यत्वको प्राप्त हुए इन गुणोंका यदि स्पर्श स्वीकार किया जाता है तो रूप, रस और गन्ध आदिका भी स्पर्श होना चाहिये, क्योंकि, प्रधानरूपसे द्रव्यपनेकी प्राप्तिके प्रति इनमें कोई अन्तर नहीं है । यदि कहा जाय कि ऐसा भी हो जावे । सो ऐसा कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, एक तो सूत्रमें ऐसा कहा नहीं है और दूसरे ऐसा माननेपर तेरह स्पर्श न रहकर बहुतसे स्पर्श प्राप्त हो जायेंगे। इसलिये कर्कश कर्कशके साथ स्पर्श करता है, इत्यादि भंग यहां नही कहने चाहिये; क्योंकि, उनका द्रव्यस्पर्श और देशस्पर्शमें अन्तर्भाव हो जाता है । परन्तु इसका वहां अन्तर्भाव नहीं होता, क्योंकि, इसमें विषय-विषयिभावकी मुख्यता है ।

अथवा सूत्र देशामर्शक होता है, इसलिये निक्षेपोंकी संख्याका नियम नहीं किया जा सकता । अतएव अपने भीतर जितने विशेष प्राप्त होते हैं उन सबके साथ आठ स्पर्शोंके संयोगसे दो सौ पचपन भंग उत्पन्न कराने चाहिये ।

विशेषार्थ – आगममें कर्कश आदि आठ स्पर्श माने गये हैं । इनका स्पर्शन इन्द्रियके द्वारा जो स्पर्श होता है उसे स्पर्शस्पर्श कहते हैं । यद्यपि स्पर्शस्पर्श शब्दका, स्पर्शोंका जो परस्परमें स्पर्श होता है उसे स्पर्शस्पर्श कहते हैं, एक यह अर्थ भी किया जा सकता है; पर इस अर्थके करनेपर सबसे बडी आपत्ति यह आती है कि स्पर्श गुणोंका अन्य गुणोंके साथ होनेवाले स्पर्शको भी स्पर्शस्पर्श मानना पडेगा। यद्यपि यह कहा जा सकता है कि गुण निःस्वभाव होते हैं,इसलिये उनका परस्परमें स्पर्श नही बनता। परन्तु गुणको कथंचित् द्रव्य मान लेनेपर इस आपत्तिका परिहार हो जाता है । इससे यद्यपि गुणका दूसरे गुणके साथ स्पर्श माननेपर जो आपत्ति प्राप्त होती है उनका परिहार हो जाता है, पर ऐसे स्पर्शको अनन्तः द्रव्यस्पर्शका

---

(१) ताप्रतौ 'पुसिज्जदि' इति पाठः ।

जो सो कम्मफासो ।। २५ ।।

तस्स अत्थो वुच्चदे-

सो अट्ठविहो-णाणावरणीय-दंसणावरणीय-वेयणीय-मोहणीय-आउअ-णामा-गोद-अंतराइयकम्मफासो । सो सव्वो कम्मफासो णाम ।। २६ ।।

अट्ठकम्माणं जीवेण विस्सासोवचएहि य णोकम्मेहि य जो फासो सो दव्वफासे पददि त्ति एत्थ ण वुच्चदे, कम्माणं कम्मेहि जो फासो सो कम्मफासो त्ति एत्थ घेत्तव्वो । संपहि फासभंगपरूवणा कीरदे । तं जहा-णाणावरणीयं णाणावरणीयेण फुसिज्जदि । १ । णाणावरणीयं दंसणावरणीयेण फुसिज्जदि । २ । णाणावरणीयं वेयणीएण फुसिज्जदि ।३। णाणावरणीयं मोहणीएण फुसिज्जदि ।४। णाणावरणीयं आउएण फुसिज्जदि । ५ । णाणावरणीयं णामेण फुसिज्जदि । ६ । णाणावरणीयं गोदेण फुसिज्जदि । ७ । णाणावरणीयं

एक भेद मानना पडता है । इसलिये स्पर्शस्पर्श शब्दको ध्यानमें रखकर यहां अन्य गुणोंके साथ कर्कश आदिके होनेवाले स्पर्शको छोड कर केवल कर्कश आदि आठ स्पर्शोंके परस्परमें होनेवाले स्पर्शको भी स्पर्शस्पर्शमें गिन लिया है । इस प्रकार स्पर्शस्पर्शके दो अर्थ प्राप्त होते हैं । प्रथम यह कि कर्कश आदि स्पर्शोंका स्पर्शन इन्द्रियके साथ जो स्पर्श होता है वह स्पर्शस्पर्श कहलाता है और दूसरा यह कि आठों स्पर्शोंका परस्पर जो स्पर्श होता है वह भी स्पर्शस्पर्श कहलाता है । इस दूसरे अर्थके अनुसार स्पर्शस्पर्शके एकसंयोगी ८, द्विसंयोगी २८, त्रिसंयोगी ५६, चतु:संयोगी ७०, पंचसंयोगी ५६, षट्संयोगी २८, सप्तसंयोगी ८ और अष्टसंयोगी १; कुल २५५ भंग होते हैं ।

अब कर्मस्पर्शका अधिकार है ।। २५ ।।

इसका अर्थ कहते हैं -

वह आठ प्रकारका है- ज्ञानावरणीयकर्मस्पर्श, दर्शनावरणीयकर्मस्पर्श, वेदनीयकर्मस्पर्श, मोहनीयकर्मस्पर्श, आयुकर्मस्पर्श, नामकर्मस्पर्श, गोत्रकर्मस्पर्श और अन्तरायकर्मस्पर्श । वह सब कर्मस्पर्श है ।। २६ ।।

आठ कर्मोंका जीवके साथ, विस्रसोपचयोंके साथ और नोकर्मोंके साथ जो स्पर्श होता है वह द्रव्यस्पर्शमें अन्तर्भूत होता है; इसलिये वह यहां नहीं कहा गया है । किन्तु कर्मोंका कर्मोंके साथ जो स्पर्श होता है वह कर्मस्पर्श है, ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिये ।

अब स्पर्शके भंगोंका कथन करते हैं । यथा-ज्ञानावरणीय ज्ञानावरणीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । १ । ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । २ । ज्ञानावरणीय वेदनीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ३ । ज्ञानावरणीय मोहनीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ४ । ज्ञानावरणीय आयु द्वारा स्पर्श किया जाता है । ५ । ज्ञानावरणीय नाम द्वारा स्पर्श किया जाता है । ६ । ज्ञानावरणीय गोत्र द्वारा स्पर्श किया जाता है । ७ । ज्ञानावरणीय अन्तराय द्वारा स्पर्श

अंतराइएण फुसिज्जदि । ८ । एवं णाणावरणीयस्स अट्ठ भंगा । दंसणावरणीयं दंसणावरणीएण फुसिज्जदि । १ । दंसणावरणीयं णाणावरणीएण फुसिज्जदि । २ । दंसणावरणीयं वेयणीएण फुसिज्जदि । ३ । दंसणावरणीयं मोहणीएण फुसिज्जदि । ४ । दंसणावरणीयं आउएण फुसिज्जदि । ५ । दंसणावरणीयं णामेण फुसिज्जदि । ६ । दंसणावरणीयं गोदेण फुसिज्जदि । ७ । दंसणावरणीयं अंतराइएण फुसिज्जदि । ८ । एवं दंसणावरणीयस्स अट्ठ भंगा । एदेसु पुव्विल्लेसु सह मेलाविदेसु सोलस भंगा होंति । १६ । संपहि वेयणीयं वेयणीएण फुसिज्जदि । १ । वेयणीयं णाणावरणीएण फुसिज्जदि । २ । वेयणीयं दंसणावरणीएण फुसिज्जदि । ३ । वेयणीयं मोहणीएण फुसिज्जदि । ४ । वेयणीयं आउएण फुसिज्जदि ।५। वेयणीयं णामेण फुसिज्जदि । ६ । वेयणीयं गोदेण फुसिज्जदि । ७ । वेयणीयं अंतराइएण फुसिज्जदि । ८ । एवं वेयणीयस्स अट्ठ भंगा । एदेसु पुव्वभंगेसु मेलाविदेसु चउवीस भंगा होंति । २४ । मोहणीयं मोहणीएण फुसिज्जदि । १ । मोहणीयं णाणावरणीएण फुसिज्जदि । २ । मोहणीयं दंसणावरणीएण फुसिज्जदि । ३ । मोहणीयं वेयणीएण फुसिज्जदि । ४ । मोहणीयं आउएण फुसिज्जदि । ५। मोहणीयं णामेण फुसिज्जदि ।६। मोहणीयं गोदेण फुसिज्जदि ।७। मोहणीयं अंतराइएण फुसिज्जदि ।८। एवं मोहणीयस्स अट्ठ भंगा । एदेसु

किया जाता है । ८ । इस प्रकार ज्ञानावरणीय कर्मके आठ भंग होते हैं ।

दर्शनावरणीय दर्शनावरणीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । १ । दर्शनावरणीय ज्ञानावरणीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । २ । दर्शनावरणीय वेदनीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ३ । दर्शनावरणीय मोहनीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ४ । दर्शनावरणीय आयु द्वारा स्पर्श किया जाता है । ५ । दर्शनावरणीय नाम द्वारा स्पर्श किया जाता है । ६ । दर्शनावरणीय गोत्र द्वारा स्पर्श किया जाता है । ७ । दर्शनावरणीय अन्तराय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ८ । इस प्रकार दर्शनावरणीय कर्मके आठ भंग होते हैं । इन्हें पूर्वोक्त आठ भंगोंमें मिलानेपर १६ भंग होते हैं ।

वेदनीय वेदनीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । १ । वेदनीय ज्ञानावरणीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । २ । वेदनीय दर्शनावरणीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ३ । वेदनीय मोहनीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ४ । वेदनीय आयु द्वारा स्पर्श किया जाता है । ५ । वेदनीय नाम द्वारा स्पर्श किया जाता है ।६। वेदनीय गोत्र द्वारा स्पर्श किया जाता है । ७ । वेदनीय अन्तराय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ८ । इस प्रकार वेदनीय कर्मके आठ भंग होते हैं । इन्हें पूर्वोक्त १६ भंगोंमें मिलानेपर २४ भंग होते हैं ।

मोहनीय मोहनीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । १ । मोहनीय ज्ञानावरणीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । २ । मोहनीय दर्शनावरणीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ३ । मोहनीय वेदनीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ४ । मोहनीय आयु द्वारा स्पर्श किया जाता है । ५ । मोहनीय नाम द्वारा स्पर्श किया जाता है । ६। मोहनीय गोत्र द्वारा स्पर्श किया जाता है । ७ । मोहनीय अन्तराय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ८ । इस प्रकार मोहनीय कर्मके आठ भंग होते हैं । इन्हें पूर्वोक्त २४ भंगोंमें मिलानेपर ३२ भंग होते हैं ।

पुव्विल्लभंगेसु पक्खित्तेसु बत्तीसभंगा होंति । ३२ । आउअं आउएण फुसिज्जदि । १ । आउअं णाणावरणीएण फुसिज्जदि । २ । आउअं दंसणावरणीएण फुसिज्जदि । ३ । आउअं वेयणीएण फुसिज्जदि । ४ । आउअं मोहणीएण फुसिज्जदि । ५ । आउअं णामेण फुसिज्जदि । ६ । आउअं गोदेण फुसिज्जदि । ७ । आउअं अंतराएण फुसिज्जदि । ८ । एवमाउअस्स अट्ठ भंगा । एदेसु पुव्विलभंगेहि सह मेलाविदेसु चत्तालीस भंगा होंति । ४० । णामं णामेण फुसिज्जदि । १ । णामं णाणावरणीएण फुसिज्जदि । २ । णामं दंसणावरणीएण फुसिज्जदि । ३ । णामं वेयणीएण फुसिज्जदि । ४ । णामं मोहणीएण फुसिज्जदि । ५ । णामं आउएण फुसिज्जदि । ६ । णामं गोदेण फुसिज्जदि । ७ । णामं अंतराइएण फुसिज्जदि । ८ । एवं णामस्स अट्ठ भंगा । एदेसु पुव्विल्लभंगेसु घेत्तूण पक्खित्तेसु अडदाल भंगा होंति । ४८। गोदं गोदेण फुसिज्जदि । १ । गोदं णाणावरणीएण फुसिज्जदि । २ । गोदं दंसणावरणीएण फुसिज्जदि । ३ । गोदं वेयणीएण फुसिज्जदि । ४ । गोदं मोहणीएण फुसिज्जदि । ५ । गोदं आउएण फुसिज्जदि । ६ । गोदं णामेण फुसिज्जदि । ७ । गोदं अंतराइएण फुसिज्जदि । ८ । एवं गोदस्स अट्ठ भंगा होंति । एदे घेत्तूण पुव्विल्लभंगेसु पक्खित्तेसु छप्पण्ण भंगा होंति । ५६। अंतराइयं अंतराइएण फुसिज्जदि । १ । अंतराइयं णाणावरणीएण फुसिज्जदि । २।

आयु आयु द्वारा स्पर्श किया जाता है । १ । आयु ज्ञानावरणीय द्वारा स्पर्श किया जाता है ।२। आयु दर्शनावरणीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ३ । आयु वेदनीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ४ । आयु मोहनीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ५ । आयु नाम द्वारा स्पर्श किया जाता है । ६ । आयु गोत्र द्वारा स्पर्श किया जाता है । ७ । आयु अन्तराय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ८ । इस प्रकार आयु कर्मके आठ भंग होते हैं । इन्हें पूर्वोक्त ३२ भंगोंमें मिलानेपर ४० भंग होते हैं ।

नाम नाम द्वारा स्पर्श किया जाता है । १ । नाम ज्ञानावरणीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । २ । नाम दर्शनावरणीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ३ । नाम वेदनीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ४ । नाम मोहनीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ५ । नाम आयु द्वारा स्पर्श किया जाता है । ६ । नाम गोत्र द्वारा स्पर्श किया जाता है । ७ । नाम अन्तराय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ८ । इस प्रकार नाम कर्मके आठ भंग होते हैं । इन्हें पूर्वोक्त ४० भंगोंमें मिलानेपर ४८ भंग होते हैं ।

गोत्र गोत्र द्वारा स्पर्श किया जाता है । १ । गोत्र ज्ञानावरणीय द्वारा स्पर्श किया जाता है ।२। गोत्र दर्शनावरणीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ३ । गोत्र वेदनीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ४ । गोत्र मोहनीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ५ । गोत्र आयु द्वारा स्पर्श किया जाता है । ६ । गोत्र नाम द्वारा स्पर्श किया जाता है । ७ । गोत्र अन्तराय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ८ । इस प्रकार गोत्र कर्मके आठ भंग होते है । इन्हें पूर्वोक्त ४८ भंगोंमें मिलानेपर ५६ भंग होते हैं ।

अन्तराय अन्तराय द्वारा स्पर्श किया जाता है । १ । अन्तराय ज्ञानावरणीय द्वारा स्पर्श

अंतराइयं दंसणावरणीएण फुसिज्जदि । ३ । अंतराइयं वेयणीएण फुसिज्जदि । ४ । अंतराइयं मोहणीएण फुसिज्जदि । ५ । अंतराइयं आउएण फुसिज्जदि । ६ । अंतराइयं णामेण फुसिज्जदि । ७ । अंतराइयं गोदेण फुसिज्जदि । ८ । एवं अंतराइयस्स अट्ठ भंगा । एदेसु पुव्विल्लभंगेसु पक्खित्तेसु चउसट्ठी भंगा होंति । ६४ । संपहि एत्थ एगादिएगुत्तरसत्तगच्छ-संकलणमेत्तपुणरुत्तभंगेसु अवणिदेसु अपुणरुत्तछत्तीसभंगा । ३६ ।

किया जाता है । २ । अन्तराय दर्शनावरणीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ३ । अन्तराय वेदनीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ४ । अन्तराय मोहनीय द्वारा स्पर्श किया जाता है । ५ । अन्तराय आयु द्वारा स्पर्श किया जाता है । ६ । अन्तराय नाम द्वारा स्पर्श किया जाता है । ७ । अन्तराय गोत्र द्वारा स्पर्श किया जाता है । ८ । इस प्रकार अन्तराय कर्मके आठ भंग होते हैं । उन्हें पूर्वोक्त ५६ भंगोंमें मिलानेपर ६४ भंग होते हैं ।

अब यहां एकसे लेकर एकोत्तर सात गच्छके संकलन प्रमाण पुनरुक्त भंगोंके घटा देनेपर अपुनरुक्त छत्तीस भंग होते हैं । ३६ ।

विशेषार्थ – कर्मस्पर्शमें न तो कर्मोंका जीवके साथ होनेवाला स्पर्श लिया गया है, न कर्मोंका उनके विस्रसोपचयोंके साथ होनेवाला स्पर्श लिया गया है, और न कर्मों नोकर्मोंके साथ होनेवाला स्पर्श लिया गया है । यहां केवल आठ कर्मोंका परस्परमें जो स्पर्श होता है उसीका ग्रहण किया गया है । कर्मस्पर्शका अर्थ है कर्मोंका परस्परमें होनेवाला स्पर्श । इस अर्थके अनुसार कर्मस्पर्शके कुल भंग ६४ होते हैं । उनमेंसे पुनरुक्त २८ भंग घटा देनेपर अपुनरुक्त भंग कुल ३६ रहते हैं । खुलासा इस प्रकार है–

क्र.सं.	संयोग	पुनरुक्त या अपुनरुक्त	क्र.सं.	संयोग	पुनरुक्त या अपुनरुक्त
१	ज्ञानावरण + ज्ञानावरण	अपुनरुक्त	१३	दर्शनावरण + आयु	अ.
२	ज्ञानावरण + दर्शनावरण	,,	१४	दर्शनावरण + नाम	,,
३	ज्ञानावरण + वेदनीय	,,	१५	दर्शनावरण + गोत्र	,,
४	ज्ञानावरण + मोहनीय	,,	१६	दर्शनावरण + अन्तराय	,,
५	ज्ञानावरण + आयु	,,	१७	वेदनीय + वेदनीय	,,
६	ज्ञानावरण + नाम	,,	१८	वेदनीय + ज्ञानावरण	पु. (३ से)
७	ज्ञानावरण + गोत्र	,,	१९	वेदनीय + दर्शनावरण	,, (११ से)
८	ज्ञानावरण + अन्तराय	,,	२०	वेदनीय + मोहनीय	अ.
९	दर्शनावरण + दर्शनावरण	,,	२१	वेदनीय + आयु	,,
१०	दर्शनावरण + ज्ञानावरण	पु. (२से)	२२	वेदनीय + नाम	,,
११	दर्शनावरण + वेदनीय	अ.	२३	वेदनीय + गोत्र	,,
१२	दर्शनावरण + मोहनीय	,,	२४	वेदनीय + अन्तराय	,,

जो सो बंधफासो णाम ।। २७ ।।

तस्स अत्थो वुच्चदे-

सो पंचविहो- ओरालियसरीरबंधफासो एवं वेउव्विय-आहार-तेया-कम्मइयसरीरबंधफासो । सो सव्वो बंधफासो णाम ।।२८।।

क्र.सं.	संयोग	पुनरुक्त या अपुनरुक्त	क्र.सं.	संयोग	पुनरुक्त या अपुनरुक्त
२५	मोहनीय + मोहनीय	अ.	४५	नाम + मोहनीय	पु. (३० से)
२६	मोहनीय + ज्ञानावरण	पु. (४से)	४६	नाम + आयु	,, (३८ से)
२७	मोहनीय + दर्शनावरण	,, (१२ से)	४७	नाम + गोत्र	अ.
२८	मोहनीय + वेदनीय	,, (२० से)	४८	नाम + अन्तराय	,,
२९	मोहनीय + आयु	अ.	४९	गोत्र + गोत्र	,,
३०	मोहनीय + नाम	,,	५०	गोत्र + ज्ञानावरण	पु. (७)
३१	मोहनीय + गोत्र	,,	५१	गोत्र + दर्शनावरण	,, (१५)
३२	मोहनीय + अन्तराय	,,	५२	गोत्र + वेदनीय	,, (२३)
३३	आयु + आयु	अ.	५३	गोत्र + मोहनीय	,, (३१)
३४	आयु + ज्ञानावरण	पु. (५ से)	५४	गोत्र + आयु	,, (३९)
३५	आयु + दर्शनावरण	,, (१३ से)	५५	गोत्र + नाम	,, (४७)
३६	आयु + वेदनीय	,, (२१ से)	५६	गोत्र + अन्तराय	अ.
३७	आयु + मोहनीय	,, (२९ से)	५७	अन्तराय + अन्तराय	,,
३८	आयु + नाम	अ.	५८	अन्तराय + ज्ञानावरण	पु. (८)
३९	आयु + गोत्र	,,	५९	अन्तराय + दर्शनावरण	,, (१६)
४०	आयु + अन्तराय	,,	६०	अन्तराय + वेदनीय	,, (२४)
४१	नाम + नाम	,,	६१	अन्तराय + मोहनीय	,, (३२)
४२	नाम + ज्ञानावरण	पु. (६ से)	६२	अन्तराय + आयु	,, (४०)
४३	नाम + दर्शनावरण	,, (१४ से)	६३	अन्तराय + नाम	,, (४८)
४४	नाम + वेदनीय	,, (२२ से)	६४	अन्तराय + गोत्र	,, (५६)

अब बन्धस्पर्शका अधिकार है ।। २७ ।।

उसका अर्थ कहते हैं -

वह पांच प्रकारका है- औदारिकशरीरबन्धस्पर्श । इसी प्रकार वैक्रियिक, आहारक, तैजस और कार्मण शरीरबन्धस्पर्श । वह सब बन्धस्पर्श है ।। २८।।

बध्नातीति बन्धः । औदारिकशरीरमेव बन्धः औदारिकशरीरबन्धः। तस्स बंधस्स फासो ओरालियसरीरबंधफासो णाम । एवं सव्वसरीरबंधफासाणं पि वत्तव्वं । कम्म-णोकम्मफासा दव्वफासे अंतब्भावं गच्छमाणा पुध कादूण किमट्ठं परूविदा ? कम्माणं कम्मेहि णोकम्माणं णोकम्मेहि णोकम्माणं कम्मेहि सह फासो अत्थि त्ति जाणावणट्ठं पुध परूवणा कदा । कम्मफासो बंधफासे अंतब्भावं गच्छमाणो किमट्ठं पुध परूविदो ? णोकम्मबंधफासस्स कम्मबंधफासो कारणमिदि जाणावणट्ठं पुध परूविदो । संपहि एत्थ बंधफासभंगे वत्तइस्सामो। तं जहा-ओरालियसरीरणोकम्मपदेसा तिरिक्ख-मणुस्सेसु ओरालियसरीरणोकम्मपदेसेहि फुसिज्जंति । १ । ओरालियणोकम्मपदेसा तिरिक्ख-मणुस्सेसु वेउव्वियणोकम्मपदेसेहि फुसिज्जंति । २ । ओरालियसरीरणोकम्मपदेसा पमत्तसंजदट्ठाणे आहारसरीरणोकम्मपदेसेहि फुसिज्जंति । ३ । ओरालियसरीरणोकम्मपदेसा तिरिक्ख-मणुस्सेसु तेजासरीरणोकम्मपदेसेहि फुसिज्जंति । ४ । ओरालियसरीरणोकम्मपदेसा तिरिक्ख-मणुस्सेसु कम्मइयसरीरपदेसेहि फुसिज्जंति । ५ । एवमोरालियसरीरस्स पंचभंगा । ५ ।

संपहि वेउव्वियसरीरणोकम्मपदेसा देव-णेरइएसु वेउव्वियसरीरणोकम्मपदेसेहि

जो बांधता है वह बन्ध कहलाता है, औदारिकशरीर ही बन्ध औदारिकशरीरबन्ध है, उस बन्धका स्पर्श औदारिकशरीरबन्धस्पर्श है । इसी प्रकार सब शरीरबन्धस्पर्शोंका भी कथन करना चाहिये ।

शंका - कर्मस्पर्श और नोकर्मस्पर्श द्रव्यस्पर्शमें अन्तर्भावको प्राप्त होते हैं । फिर इनका अलगसे कथन क्यों किया है ?

समाधान - कर्मोंका कर्मोंके साथ, नोकर्मोंका नोकर्मोंके साथ और नोकर्मोंका कर्मोंके साथ स्पर्श होता है, इस बातका ज्ञान करानेके लिये इनका अलगसे कथन किया गया है ।

शंका - कर्मस्पर्श बन्धस्पर्शमें अन्तर्भावको प्राप्त होता है, फिर उसका पृथक्से कथन क्यों किया है ?

समाधान - कर्मबन्धस्पर्श नोकर्मबन्धस्पर्शका कारण है, यह जतलानेके लिये उसका अलगसे कथन किया है ।

अब यहां बन्धस्पर्श के भंग बतलाते हैं । यथा-औदारिक शरीर नोकर्म प्रदेश तिर्यंच और मनुष्योंमें औदारिक शरीर नोकर्म प्रदेशोंके द्वारा स्पर्श किये जाते हैं । १ । औदारिक शरीर नोकर्म प्रदेश तिर्यंच और मनुष्योंमें वैक्रियिक शरीर नोकर्म प्रदेशोंके द्वारा स्पर्श किये जाते हैं । २ । औदारिक शरीर नोकर्म प्रदेश प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें आहारक शरीर नोकर्म प्रदेशोंके द्वारा स्पर्श किये जाते हैं । ३ । औदारिक शरीर नोकर्म प्रदेश तिर्यंच और मनुष्योंमें तैजस शरीर नोकर्म प्रदेशोंके द्वारा स्पर्श किये जाते हैं । ४ । औदारिक शरीर नोकर्म प्रदेश तिर्यंच और मनुष्योंमें कार्मण शरीरके प्रदेशों द्वारा स्पर्श किये जाते हैं । ५ । इस प्रकार औदारिक शरीरके पांच भंग होते हैं ।

वैक्रियिक शरीर नोकर्म प्रदेश देव और नारकियोंमें वैक्रियिक शरीर नोकर्म प्रदेशोंके द्वारा

फुसिज्जंति । १ । वेउव्वियसरीरणोकम्मपदेसा तिरिक्ख-मणुस्सेसु ओरालियसरीरणोकम्म-पदेसेहि फुसिज्जंति । २ । वेउव्वियसरीरणोकम्मपदेसाणं पमत्तसंजदट्ठाणे आहारसरीरणो-कम्मपदेसेहि सह फासो णत्थि । कुदो ? पमत्तसंजदस्स अणिमादिलद्धिसंपण्णस्स विउव्विदसमए आहारसरीरुट्ठावणसंभवाभावादो । वेउव्वियसरीरणोकम्मपदेसा चदुगदीसु तेयासरीरणोकम्मपदेसेहि फुसिज्जंति । ३ । वेउव्वियसरीरणोकम्मपदेसा चदुगदीसु कम्मइय-सरीरपदेसेहि फुसिज्जंति । ४ । एवं वेउव्वियसरीरस्स चत्तारि भंगा । पुणो एदेसु पुव्वभंगेसु पक्खित्तेसु णव भंगा होंति । ९ ।

आहारसरीरणोकम्मपदेसा पमत्तसंजदट्ठाणे आहारसरीरणोकम्मपदेसेहि फुसिज्जंति ।१। आहारसरीरणोकम्मपदेसा पमत्तसंजदेसु ओरालियसरीरणोकम्मपदेसेहि फुसिज्जंति ।२। आहार-वेउव्वियसरीराणमण्णोण्णेहि णत्थि फासो, आहारसरीरमुट्ठाविदकाले विउव्वणाभावादो। आहारसरीरणोकम्मपदेसा पमत्तसंजदट्ठाणे तेयासरीरणोकम्मपदेसेहि फुसिज्जंति, अणिस्सरणप्पयस्स तेजइयसरीरस्स णोकम्माणं सव्वद्धं जीवे सत्तुवलंभादो ।३। आहारसरीरणोकम्मपदेसा पमत्तसंजदेसु कम्मइयसरीरकम्म[1] पदेसेहि फुसिज्जंति, अट्ठण्णं कम्माणं पमत्तसंजदेसु सव्वद्धं सत्तुवलंभादो । ४ । एवमाहारसरीरस्स चत्तारि भंगा । एदेसु पुव्वभंगेसु पक्खित्तेसु तेरस भंगा होंति । १३ ।

स्पर्श किये जाते हैं । १ । वैक्रियिक शरीर नोकर्म प्रदेश तिर्यंच और मनुष्योंमें औदारिक शरीर नोकर्म प्रदेशोंके द्वारा स्पर्श किये जाते हैं । २ । वैक्रियिक शरीर नोकर्म प्रदेशोंका प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें आहारक शरीर नोकर्म प्रदेशोंके साथ स्पर्श नहीं है, क्योंकि, अणिमा आदि लब्धियोंसे सम्पन्न प्रमत्तसंयत जीवके विक्रिया करते समय आहारक शरीरकी उत्पत्ति सम्भव नहीं है । वैक्रियिक शरीर नोकर्म प्रदेश चारों गतियोंमें तैजस शरीर नोकर्म प्रदेशोंके द्वारा स्पर्श किये जाते हैं । ३ । वैक्रियिक शरीर नोकर्म प्रदेश चारों गतियोंमें कार्मण शरीर प्रदेशोंके द्वारा स्पर्श किये जाते हैं । ४ । इस प्रकार वैक्रियिक शरीरके चार भंग होते हैं । फिर इन्हें पूर्वोक्त पांच भंगोंमें मिला देनेपर नौ भंग होते हैं । ९ ।

आहारक शरीर नोकर्म प्रदेश प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें आहारक शरीर नोकर्म प्रदेशोंके द्वारा स्पर्श किये जाते हैं । १ । आहारक शरीर नोकर्म प्रदेश प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें औदारिक शरीर नोकर्म प्रदेशोंके द्वारा स्पर्श किये जाते हैं । २ । आहारक शरीर और वैक्रियिक शरीरका परस्परमें स्पर्श नहीं होता, क्योंकि, आहारक शरीरके उत्थानकालमें विक्रिया नहीं होती । आहारक शरीर नोकर्म प्रदेश प्रमत्तसंयतगुणस्थानमें तैजस शरीर नोकर्म प्रदेशोंके द्वारा स्पर्श किये जाते हैं, क्योंकि, अनिःसरणात्मक तैजस शरीरके नोकर्म प्रदेशोंका जीवके सदाकाल सत्त्व पाया जाता है । ३ । आहारक शरीर नोकर्म प्रदेश प्रमत्तसंयत जीवोंमें कार्मण शरीर नोकर्म प्रदेशोंके द्वारा स्पर्श किये जाते हैं, क्योंकि, आठों कर्मोंकी प्रमत्तसंयत जीवोंके सदाकाल सत्ता पाई जाती है । ४ । इस प्रकार आहारक शरीरके चार भंग होते हैं । इन्हें पहलेके नौ भंगोंमें मिलानेपर तेरह भंग होते हैं । १३ ।

---

(१) ताप्रतौ- 'सरीरणोकम्म' इति पाठः ।

तेयासरीरणोकम्मपदेसा चउग्गईसु तेयासरीरणोकम्मपदेसेहि[1] फुसिज्जंति । १ । तेयासरीरणोकम्मपदेसा तिरिक्ख-मणुस्सेसु ओरालियसरीरणोकम्मपदेसेहि फुसिज्जंति ।२। तेयासरीरणोकम्मपदेसा देव-णेरइएसु वेउव्वियसरीरणोकम्मपदेसेहि फुसिज्जंति । ३ । तेयासरीरणोकम्मपदेसा पमत्तसंजदेसु आहारसरीरणोकम्मपदेसेहि फुसिज्जंति । ४ । तेयासरीरणोकम्मपदेसा चउग्गईसु कम्मइयसरीरकम्म[2]पदेसेहि फुसिज्जंति । ५ । एवं तेयासरीरस्स पंच भंगा होंति । एदेसु पुव्वभंगेसु पक्खित्तेसु अट्ठारस भंगा होंति । १८ ।

कम्मइयसरीरकम्मपदेसा चउग्गईसु कम्मइयसरीरकम्मपदेसेहि फुसिज्जंति । १ । कम्मइयसरीरकम्मपदेसा तिरिक्ख-मणुस्सेसु ओरालियसरीरणोकम्मपदेसेहि फुसिज्जंति । २ । कम्मइयसरीरकम्मपदेसा देव-णेरइएसु वेउव्वियसरीरणोकम्मपदेसेहि फुसिज्जंति ।३। कम्मइयसरीरकम्मपदेसा पमत्तसंजदट्ठाणे आहारसरीरणोकम्मपदेसेहि फुसिज्जंति । ४ । कम्मइयसरीरकम्मपदेसा चउग्गईसु तेयासरीरणोकम्मपदेसेहि फुसिज्जंति । ५ । एवं कम्मइयसरीस्स पंच भंगा । एदेसु पुव्वभंगेसु पक्खित्तेसु तेवीसभंगा होंति । २३ ।

एदेसु अपुणरुत्तभंगा चोद्दस हवंति । १४ । अवसेसा णव पुणरुत्तभंगा । ९ । एवं

तैजस शरीर नोकर्म प्रदेश चारों गतियोंमें तैजस सरीर नोकर्म प्रदेशोंके द्वारा स्पर्श किये जाते हैं ।१। तैजस शरीर नोकर्म प्रदेश तिर्यंच और मनुष्योंमें औदारिक शरीर नोकर्म प्रदेशोंके द्वारा स्पर्श किये जाते हैं ।२। तैजस शरीर नोकर्म प्रदेश देव और नारकियोंमें वैक्रियिक शरीर नोकर्म प्रदेशों द्वारा स्पर्श किये जाते हैं ।३। तैजस शरीर नोकर्म प्रदेश प्रमत्तसंयत जीवोंमें आहारक शरीर नोकर्म प्रदेशों द्वारा स्पर्श किये जाते हैं ।४। तैजस शरीर नोकर्म प्रदेश चारों गतियोंमें कार्मण शरीर कर्म प्रदेशों द्वारा स्पर्श किये जाते हैं । ५ । इस प्रकार तैजस शरीरके पांच भंग होते हैं । इन्हें पहलेके १३ भंगोंमें मिलानेपर अठारह भंग होते हैं ।१८।

कार्मण शरीर कर्म प्रदेश चारों गतियोंमें कार्मण करीर कर्मप्रदेशों द्वारा स्पर्श किये जाते हैं । १ । कार्मण शरीर कर्मप्रदेश तिर्यंच और मनुष्योंमें औदारिक शरीर नोकर्म प्रदेशों द्वारा स्पर्श किये जाते हैं । २ । कार्मण शरीर कर्म प्रदेश देव और नारकियोंमें वैक्रियिक शरीर नोकर्म प्रदेशों द्वारा स्पर्श किये जाते हैं । ३ । कार्मण शरीर कर्म प्रदेश प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें आहारक शरीर नोकर्म प्रदेशों द्वारा स्पर्श किये जाते हैं ।४। कार्मण शरीर कर्म प्रदेश चारों गतियोंमें तैजस शरीर नोकर्म प्रदेशों द्वारा स्पर्श किये जाते हैं । ५ । इस प्रकार कार्मण शरीरके पांच भंग होते हैं । इन्हें पहलेके १८ भंगोंमें मिलानेपर तेईस भंग होते हैं । २३ ।

इनमें अपुनरुक्त भंग चौदह होते हैं ।१४। अवशेष नौ भंग पुनरुक्त होते हैं ।९।

---

(१) ताप्रतौ 'सरीरे (पदेसे) हि' इति पाठः । (२) ताप्रतौ '-सरीरणोकम्म' इति पाठः ।

कम्म-णोकम्मसंणियासो परूविदो । कम्मसंणियासो पुण पुव्वं परूविदो त्ति पुणरुत्तभएण ण परूविदो । एवं बन्धफासो गदो ।

जो सो भवियफासो णाम ।। २९ ।।

तस्स अत्थो वुच्चदे -

जहा-विस-कूड-जंत-पंजर-कंदय-वग्गुरादीणि कत्तारो समोद्दिदारो य भवियो फुसणदाए णो य पुण ताव तं फुसदि सो सव्वो भवियफासो णाम ।। ३० ।।

विसं सुप्पसिद्धं । कागुंदुरादिधरणट्ठमोद्दिदं कूडं णाम । सीह-वग्घधरणट्ठमोद्दिद-मब्भंतरकयच्छालियं जंतं णाम । तित्तिर-लावादि[1] धरणट्ठं रइदकलिंज[2] कलावो पंजरो णाम । हत्थिधरणट्ठमोद्दिदवारिबंधो कंदओ णाम । हरिण-वराहादिमारणट्ठमो-द्दिदकंदा वा कंदओ णाम । वग्गुरा सुप्पसिद्धा । इच्चादीणि दव्वाणि इच्छिदवत्थुफुसण-ट्ठमोद्दिदाणि भवियफासो णाम । एदेसिं जंतादीणं कत्तारो करेंता ओद्दिदारो य एदेसिं जंतादीणमिच्छिदपदेसे ट्ठवेंता च भवियफासो णाम, कारणे कज्जुवयारादो । किंणिबंधणो

इस प्रकार कर्म और नोकर्म संन्निकर्षका कथन किया । कर्मसंन्निकर्षका कथन तो पहले ही कर आये हैं, इसलिये पुनरुक्त दोषके भयसे उसका यहां पुन: कथन नहीं किया । इस प्रकार बन्ध-स्पर्शका कथन समाप्त हुआ ।

अब भव्यस्पर्शका अधिकार है ।। २९ ।।

उसका अर्थ कहते हैं --

यथा-विष, कूट, यन्त्र, पिंजरा, कन्दक और पशुको फँसानेका जाल आदि तथा इनके करनेवाले और इन्हें इच्छित स्थानमें रखनेवाले स्पर्शनके योग्य होंगे परन्तु अभी उन्हें स्पर्श नहीं करते; वह सब भव्य स्पर्श है ।। ३० ।।

विष सुप्रसिद्ध है । कौआ और चूहा आदिके धरनेके लिये जो बनाया जाता है उसे कूट कहते हैं। जो सिंह और व्याघ्र आदिके धरनेके लिये बनाया जाता है और जिसके भीतर बकरा रखा जाता है उसे यन्त्र कहते हैं । तीतर और लाव आदिके पकडनेके लिये जो अनेक छोटी छोटी पंचे लेकर बनाया जाता है उसे पिंजरा कहते हैं । हाथीके पकडनेके लिये जो वारिबन्ध बनाया जाता है उसे कन्दक कहते हैं । अथवा हरिण और सुअर आदिके मारनेके लिये जो फंदा तैयार किया जाता है उसे कन्दक कहते हैं। वग्गुरा प्रसिद्ध ही है। इच्छित वस्तुके स्पर्शन अर्थात् पकडनेके लिये इत्यादि द्रव्योंका रखना भव्यस्पर्श कहलाता है । तथा इन यन्त्रादिके करनेवाले, और 'ओद्दिदारो' अर्थात् इन यन्त्रादिको इच्छित स्थानपर रखनेवाले भी भव्यस्पर्श कहलाते हैं, क्योंकि, यहां कारणमें कार्यका उपचार किया गया है ।

यन्त्रादिकको स्पर्श संज्ञा किस निमित्तसे प्राप्त होती है, ऐसा पूछनेपर कारणका कथन

---

(१) अप्रतौ 'लावदि' इति पाठः । (२) प्रतिषु 'कलिंच' इति पाठः ।

जंतादीणं फासववएसो त्ति भणिदे कारणपरूवणट्ठमाह– 'भवियो फुसणदाए णो य पुण ताव तं फुसदि' भवियो जोग्गो पुसणदाए पासस्स णो पुण ताव तं इच्छिददव्वं फुसदि तस्स भवियफासो त्ति सण्णा । एवं भवियफासो गदो ।

जो सो भावफासो णाम ।। ३१ ।।

तस्स अत्थपरूवणं कस्सामो –

उवजुत्तो पाहुडजाणओ सो सव्वो भावफासो णाम ।। ३२ ।।

फासपाहुडं णादूण जो तत्थ उवजुत्तो सो भावफासो त्ति घेत्तव्वो । एदं सुत्तं देसामासियं, तेण आगमेण विणा पासुवजोगजुत्तो जीव–पोग्गलादिदव्वाणं णाणादिभावेहि फासो य भावफासो त्ति घेत्तव्वो । एवं भावफासो गदो ।

करनेके लिये कहा है कि 'भवियो फुसणदाए णो य पुण ताव तं फुसदि'। अर्थात् जो स्पर्शनके योग्य तो है, परन्तु इस इच्छित वस्तुको स्पर्श नहीं करता उसकी 'भव्यस्पर्श' संज्ञा है ।

इस प्रकार भव्यस्पर्शका कथन समाप्त हुआ ।

विशेषार्थ – जो पर्याय भविष्यमें होनेवाली होती है उसे भव्य या भावी कहते हैं । यहां स्पर्शका प्रकरण है, इसलिये भव्यस्पर्शका यह अर्थ होता है कि जो भविष्यमें स्पर्श पर्यायसे युक्त होगा वह भव्यस्पर्श है । इसके उदाहरण स्वरूप सूत्रमें विष व यन्त्रादिक पदार्थ लिये गये हैं । इन पदार्थोंका निर्माण मुख्यतया अन्य जीवोंको पकडनेके लिये किया जाता है, इसलिये इनकी भव्यस्पर्श संज्ञा होती है । इसी प्रकार कारणमें कार्यका उपचार करके इन विषादिकके निर्माता और इन्हें इच्छित स्थानपर रखनेवाले भी भव्यस्पर्श कहलाते हैं । द्रव्य निक्षेपमें आगे होनेवाली पर्याय और उसके कारण दोनोंका ग्रहण होता है। इसी प्रकार यहां भी समझना चाहिये ।

अब भावस्पर्शका अधिकार है ।। ३१ ।।

इसका अर्थ कहते हैं –

जो स्पर्शप्राभृतका ज्ञाता उसमें उपयुक्त है वह सब भावस्पर्श है ।। ३२ ।।

स्पर्शप्राभृतको जानकर जो उसमें उपयुक्त है वह सब भावस्पर्श है, ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिये। यह सूत्र देशामर्शक है, इसलिये जो आगमके विना स्पर्शके उपयोगसे युक्त है और जो जीव, पुद्गल आदि द्रव्योंका ज्ञानादि भावों द्वारा स्पर्श होता है वह भावस्पर्श है; ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिये ।

विशेषार्थ – आगम और नोआगमके भेदसे भावनिक्षेप दो प्रकारका होता है । भावस्पर्शमें ये दोनों भेद विवक्षित हैं । जो स्पर्शप्राभृतका ज्ञाता होकर उसमें उपयुक्त है वह पहला भावस्पर्श है; और जो स्पर्श प्राभृतका ज्ञाता नहीं भी है, किन्तु स्पर्शरूप उपयोगसे युक्त है वह दूसरा भावस्पर्श है । तथा जीव–पुद्गलादि द्रव्योंका जो ज्ञान आदि अपने अपने भावोंके द्वारा स्पर्श होता है वह भी दूसरा भावस्पर्श है । यह उक्त कथनका तात्पर्य है । यद्यपि सूत्रमें प्रथम प्रकारके भावस्पर्शका ही ग्रहण किया है, पर सूत्रको देशामर्शक मानकर यहां भावस्पर्शके अन्य भेदोंका भी विवेचन किया गया है ।

इस सप्रकार भावस्पर्शका कथन समाप्त हुआ ।

एदेसिं फासाणं केण फासेण पयदं ? कम्मफासेण पयदं ॥३३॥

एदं खंडगंथमज्झप्पविसयं पडुच्च कम्मफासे पयदमिदि भणिदं । महाकम्मपयडिपाहुडे पुण दव्वफासेण सव्वफासेण कम्मफासेण पयदं । कधमेदं णव्वदे ? दिगंतरसुद्धीए दव्वफासपरूवणाए विणा तत्थ फासाणुयोगस्स महत्ताणुववत्तीदो । जदि कम्मफासे पयदं तो कम्मफासो सेसपण्णारसअणुओगद्दारेहि भूदवलिभयवदा सो एत्थ किण्ण परूविदो ? ण एस दोसो, कम्मक्खंधस्स फाससण्णिदस्स सेसाणुओगद्दारेहि परूवणाए कीरमाणाए वेयणाए परूविदत्थादो विसेसो णत्थि त्ति कादूण अकयतप्परूवणत्तादो[1] । जदि एवं अपुणरुत्ताणं सव्व-दव्वफासाणं एत्थ परूवणा किण्ण कदा ? ण, पयदाए अज्झप्पविज्जाए अपयदअणज्झप्पविज्जाए बहुणयगहण[2] णिलीणाए परूवणाणुववत्तीदो ।

एवं फासणिक्खेवे समत्ते फासे त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

इन स्पर्शोंमेंसे प्रकृतमें कौन स्पर्श लिया गया है ? प्रकृतमें कर्मस्पर्श लिया गया है ॥ ३३ ॥

अध्यात्मको विषय करनेवाले इस खण्ड ग्रन्थकी अपेक्षा कर्मस्पर्श प्रकरणप्राप्त है, ऐसा यहां कहा है । महाकर्मप्रकृतिप्राभृतमें तो द्रव्यस्पर्श, सर्वस्पर्श और कर्मस्पर्श इन तीनोंका प्रकरण है ।

शंका – यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान – दिगन्तर शुद्धिमें द्रव्यस्पर्शका कथन किये विना वहां स्पर्श अनुयोगका महत्त्व नहीं बन सकता, इससे मालूम पडता है कि वहां द्रव्यस्पर्श, सर्वस्पर्श और कर्मस्पर्श इन तीनोंसे प्रयोजन है।

शंका – यदि प्रकृतमें कर्मस्पर्शसे प्रयोजन है तो भूतबलि भगवान्‌ने शेष प्रन्द्रह अनुयोगद्वारोंका अवलम्बन लेकर उसका यहां कथन क्यों नहीं किया ?

समाधान – यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, स्पर्श संज्ञावाले कर्मस्कन्धका शेष अनुयोगद्वारोंके द्वारा प्रतिपादन करनेवाले वेदना अधिकारमें कथन किया है । उसके सिवाय और कोई विशेष नहीं है, ऐसा समझकर यहां उसका कथन नहीं किया है ।

शंका – यदि ऐसा है तो सर्वस्पर्श और द्रव्यस्पर्श तो अपुनरुक्त थे, उनका यहां कथन क्यों नहीं किया ?

समाधान – नहीं, क्योंकि, यहां अध्यात्म विद्याका प्रकरण है, इसलिये अनेक नयोंकी विषयभूत अनध्यात्म विद्याका प्रकृतमें कथन करना नहीं बन सकता ।

विशेषार्थ – यहां स्पर्श निक्षेप तेरह प्रकारका कहा है । उनमेंसे प्रकृतमें कर्मस्पर्श लिया गया है। प्रश्न यह है कि यदि प्रकृतमें कर्मस्पर्श लिया गया है तो इसका नामकर्मके सिवा शेष कर्मनयविभाषणता व कर्मनामविधान आदि पन्द्रह अनुयोगद्वारोंके द्वारा अवश्य कथन करना था । समाधान यह है कि पहले वेदना अनुयोगद्वारोंमें वेदना शब्दसे कर्मका ही ग्रहण किया है ।

---

(१) ताप्रतौ 'अकयत्तपरूवणत्तादो' इति पाठः । (२) प्रतिषु 'गहणा-' इति पाठः ।